प्रथम अध्याय

"उपन्यासकार 'संजीव' तथा 'रवींद्र ठाकुर' : तुलनात्मक विवेचन"

प्रथम अध्याय

''उपन्यासकार 'संजीव' तथा 'रवींद्र ठाकुर' : तुलनात्मक विवेचन''

1. प्रास्तविक :-

किसी भी सर्जक की सृजनशील रचना को समझना हो तो रचना में निहित मूल संवेदना तो आधारभूत होती ही हैं लेकिन रचनाकार के जीवन और अनुभव जगत् को जानना भी रचना को जानने के लिए उपयुक्त सिद्ध होता है। लेखक के जीवन की अनुभूतियों, स्मृतियों की अभिव्यक्ति उसके साहित्य में हुआ करती है। अर्थात् श्रेष्ठ साहित्य कृति को जानने में साहित्यकार का परिचय पाना भी निश्चित ही मददगार सिद्ध होता है। राजेंद्र यादव का कहना सही है कि ''कलाकार का व्यक्तित्व, उसका परिचय, उसका विश्वास और उसकी प्रतिबद्धता सभी कुछ उसकी कला होती है। जो वहाँ नहीं है, उसका महत्त्व और मूल्य क्या और क्यों हो?''[1] इसी प्रयोजन से विवेच्य रचनाकारों के संक्षिप्त जीवन परिचय एवं कृतित्व परिचय का यहाँ विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत है -

1.1 संजीव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

जन्मतिथि तथा जन्मस्थान -

हिंदी कथा साहित्य में संजीव एक ऐसा नाम जिसने हर बार अपने उपन्यासों में नयी जमीन तलाशी है। संजीव शोषितों के पक्ष के मुखर एवं जुंझारू कथाकार है। इनका जन्म 6 जुलाई, 1947 को सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश) के बांगरकलाँ गाँव में हुआ। एक गरीब किसान परिवार के बेटे। संजीव औसत मध्यवर्गीय जीवन के लेखक नहीं हैं तो अपनी उत्सुकता और कलम की भूख में कोई भी हद लांघने को उद्यत नजर आते हैं, चाहे वह सुदूर पर्वतीय क्षेत्र हो या अंतरिक्ष ।

1.1.2 माता-पिता, परिवार :-

संजीव कुलटी के एक गरीब किसान परिवार से हैं। इनका परिवार निम्नमध्यवर्ग से मध्यवर्ग की ओर उठता हुआ दिखाई देता है। ''माँ-पिताजी एवं दो बड़े भाई दिवंगत हो चुके

---

1. राजेंद्र यादव - औरों के बहाने, पृष्ठ - 132-133

हैं। बहन 72 वर्ष की विधवा अपने घर रहती है। पत्नी प्रभावती देवी नाममात्र शिक्षित हैं। चार बेटियाँ है। जिसमें मंजू, अंजू, अनीता और इंदू और बेटा संतोष हैं। मंजू मंदबुद्धि (Mentaly retareded) है। परिवार में अंजू और उसकी बेटी विपश्यजा साथ में रहती है।''[1] इस प्रकार इनका परिवार है। संजीव के व्यक्तित्व निर्माण में पारिवारिक जीवन के संस्कार एवं आदर्शो का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

1.1.3 बचपन :-

संजीव का बचपन सुलतानपुर के अपने गाँव बाँगरकलाँ जौनपुर की अपनी ननिहाल दुमदुमा (उत्तर प्रदेश में) बीता। तथा चार वर्ष की उम्र से पश्चिम बंगाल के 'कुलटी' नामक औद्योगिक कस्बे में बीता। बहरहाल गाँव से काका ले आए थे कुलटी 'इंडियन आयरन एंड स्टील कंपनी' के पिछडे औद्योगिक कस्बे में।

बचपन में संजीव को फुटबॉल, कबड्डी, गिल्ली-डंडा, कंचे आदि खेल खेलने का शौक था। तुकबंदी की अंताक्षरी भी खेलते थे। प्रारंभ से ही साहित्य की प्रतियोगिता, वाद-विवाद में अंश ग्रहण करते थे। क्लास में हमेशा फर्स्ट आते थे मगर मैट्रिक की परीक्षा में द्वितीय आयें। इसके पीछे कारण वे बताते है कि, ''मौसमी लेखन के बींच ऊलजलूल लेखन करता था। जैसे सहपाठी सूरज के साथ प्रधानमंत्री को पत्र लिखना, प्रधानमंत्री जी, देश की हालत बड़ी खराब होती जा रही है। सूरज द्वारा अपनाई गई मार्क्सवादी राहपर आया। धर्म के सहगामियों द्वारा धीरे-धीरे कुछ कुटेंबों के दलदल में भी फँसा। लेकिन जल्दी ही वहाँ से निकल आया। इसका फल यह हुआ कि, स्कूल का कभी का फर्स्ट वॉय, मैट्रिक में सेकंड डिवीजन से उत्तीर्ण हुआ। गाँव अभी भी जुड़ा जाता बींच-बीच में जहाँ दो-दो कोस तक नाच देखने चल देता। रात और दिन को खेती के काम।''[2] संजीव बचपन में ईगोइस्ट और अत्यंत भावुक थे इस कारण कईयों की राय उनसे नहीं मिलती थी।

1.1.4 शिक्षा :-

संजीव की प्रारंभिक शिक्षा के बारें में वे कहते हैं कि ''शुरू में शिवजी के चौरे, आदि पर एक तरह से फुटपाथी शिक्षा रही। फिर पाँचवीं से दसवीं की शिक्षा केन्दुआ हाईस्कूल में। और फिर कॉलेज। बी.एस्सी. वर्धमान विश्वविद्यालय से पूरा किया। बी.बी. कॉलेज से

---

1. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत।
2. साहित्य हिंदुस्तान धनबाद, मंगलवार, 15 अगस्त, 2006

फिर ए.आई.सी. एम.एस्सी डिग्री विश्लेषणात्मक रसायन के समकक्ष इस्टीट्यूशन ऑफ केमिस्ट, कलकत्ते से की।''[1] संजीव की शिक्षा-दीक्षा विज्ञान की ही रही। हिन्दी अंग्रेजी साहित्य मात्र ग्यारहवीं कक्षा तक ही लिया था।

1.1.5 नौकरी :-

संजीव ने ए.आई.सी. पूरा किया। इसके बाद कुलटी के इण्डियन आयरन एन्ड स्टील कंपनी में सन 1965 से 2002 तक रसायनज्ञ रहें। उसके बाद कुछ दिन 'अक्षरपर्व' का संपादन किया । फिर एक सेमिस्टर विजिटिंग स्कालर, हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में। फिर नौ-महीने 'रे-माधव प्रकाशन' में संपादक रहें। अप्रैल 2007 से प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'हंस' के कार्यकारी संपादक के रूप में कार्यरत हैं।

1.1.6 विवाह एवं दाम्पत्यजीवन :-

संजीव का विवाह श्रीमती प्रभादेवी से हुआ। प्रभादेवी के रूप में उन्हें एक सहज, संतुलित शालीन एवं सुशील पत्नी मिली। प्रभादेवी नाममात्र शिक्षित हैं। संजीव के लेखन के प्रति एक प्रछन्न आदर का भाव ही उनके मन में है। संजीव के साथ सुख-दु:ख के हर समय में वे परछाई की तरह रही। संर्जव अपने वैवाहिक जीवन से पूर्णत: संतुष्ट हैं।

1.1.7 मित्र :-

संजीव कहते हैं कि ''यूं तो मेरे मित्र पूरे देशभर में फैले हुए हैं। यह मित्र साहित्य तथा साहित्य की दुनिया से बाहर दोनों ही स्तरों के हैं। जिसमें पढ़े-लिखे भी हैं। कुछ अल्पशिक्षित भी है और कुछ अशिक्षित भी। इन मित्रों में कुछ नाम है शिवमूर्ति बलराम, रामचंद्र ओझा, रविभूषण, प्रेमपाल शर्मा, ओम शर्मा, अन्तथचंद्र, विजय आदि।''[2] इस प्रकार संजीव अपने मित्रों के बारे में बताते हैं।

1.1.8 साहित्य में रुचि :-

भाषा के प्रति संजीव को पहले से मोह था। 'संजीव' साहित्य में रुचि जगाने का श्रेय वरिष्ठ मित्र नरेन्द्रनाथ ओझा को मानतें है। पर शुरू-शुरू में साहित्य के क्षेत्र में चारा

---

1. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत।
2. वही।

देकर ही बुलाया गया ऐसा उनका मत था। ''ड्रिल के पीरियड के समय मास्टर साहब अनिल कुमार महथा जी को ड्रिल कराने की फुर्सत नहीं थी, सो विसिल के पुरस्कार की ड्रिल पर कविता प्रतियोगिता। और तभी से पुरस्कार''[1] साहित्य में पहले से रुचि थी। प्रकृति के रूपों में उनका मन उलझता रहता। तब उनके प्रिय कवि 'पन्त' थे। प्रेमचन्द, सुदर्शन, शिवपूजन सहाय, पदुमलाल पुन्नालाल बक्षी की रचनाओं से अनुप्रेरित होकर पहली हृदय परिवर्तन की कहानी हस्तलिखित पत्रिका 'पल्लव' में आयीं।

लेखन और लेखन में संजीव फर्क मानते है। उनका मानना है कि ''अगणित नरक कुंडों से जूझ कर आया हुआ लेखन वहीं नहीं होता जो उत्तम स्वादों, सुगंधों और भोग की लिप्सा या अपच से वमन से आता है वे इस नरक की मूर्त-अमूर्त चीखों की अवहेलना नहीं कर सकते। उनके मुक्ति के प्रश्नों को कला और दार्शनिकता की भव्य भूलभुलैय्या या भ्रामक विलासित में भरमा देनेवालों से अपनी अलग राह मानता हूँ। साहित्य कोई निष्क्रिय बौद्धिक उत्पाद नहीं है। एक आंतरिक अनुशासन हमेशा मुझे नियंत्रित करता है और इस अनुशासन के कई कारक है, भगतसिंह, म. गांधी, ज्योतिबा फूलें, सावित्री फूले, छत्रपति साहुजी, नागभूषण पट्टनायक, कमालपाशा तुर्क, मैकमक्युरी, गोगेल, गोर्की, ऑप्टेन सेनक्लेयर, पं.नाथुराम शंकर शर्मा, प्रेमचंद, सुकांत आदि। जो भूगोल और इतिहास की हजार परतों में जलते है और हमेशा रहेंगे।''[2] इस प्रकार संजीव लेखन में फर्क मानते हैं।

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ :-

किसी भी साहित्यकार के व्यक्तिगत जीवन की विशेषताएँ उसके साहित्य को समझने में सहायक सिद्ध होती है। साहित्यकार के विचार, भावनाएँ संवेदनाएँ उसके आदर्श उसके जीवन की प्रतिछाया होती है। लेखक साहित्य सृजन के लिए सामग्री संकलन जीवन और जगत् से ही ग्रहण करता है। संजीव के साहित्य पर उनके जीवन की छाप है।

व्यक्तित्व व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक प्रवृत्तियों का समुच्चय है जो हर एक व्यक्ति को अन्य से अलग करता है। इसी कारण एक व्यक्ति तथा साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रभाव दूसरे व्यक्ति पर पडता है।

---

1. साहित्य हिंदुस्तान धनबाद, मंगलवार, 15 अगस्त, 2006
2. परस्पर : जुलाई 2006 (पृष्ठ 30)

1.2.1 बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व :-

संजीव का बाह्य व्यक्तित्व साधारण है, जैसे - ऊँचा कद, गौरवर्ण, दीप्तिमान चेहरा, छरहरा शरीर, होठोंपर चिरपरिचित बाल-सुलभ मुस्कान, सिकुडी हुई गाझिन भोंहें और इन भौंहों के नीचे झांकती पुतलियों में मन के तल को टटोलने वाली दिपदिप रोशनी। संजीव के बाह्य व्यक्तित्व की तरह उनका आंतरिक व्यक्तित्व भी स्वभाव से सरल, जिंदादिल, स्नेहपूर्ण व्यवहारवाला, अभिभावकीय स्नेह से पूरित, सहज दोस्ताना करनेवाला। आदि उनके आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं।

1.2.2 विभिन्न रचनाकारों से प्रभावित :-

संजीव अपना लेखन उद्देश्यपरक मानते हैं। इस उद्देश्य के लिए कोई भी मंच, संप्रेषण की कोई भी तकनीक और माध्यम अपनाने के लिए वे तैयार रहते हैं। ''बचपन से प्रकृति के रूपों में वे उलझता रहा। आने पन्त प्रिय कवि थे। फिर प्रेमचंद, सुदर्शन, शिवपूजन सहाय, पदुमलाल पन्नालाल बक्षी की रचनाओं से अनुप्रेरित होकर पहली, हृदयपरिवर्तन की कहानी हस्तलिखित पत्रिका 'पल्लव' में।''[1] कॉलेज में वैचारिक स्तर पर काफी बदलाव आया। सुननवृन्त और जालों पर झिलमिलाते तुनिह बिन्दु कब श्रम सीकरों द्वारा विस्थापित हुए उन्हें पता न चला। इन्हीं दिनों उन्होंने चेखव, दोस्तोएवस्की, गोर्की, तोल्सतोय, ओहेनरी, लू-सुन, रवींद्र, शरत, सार्त्र, कामू, काफका आदि को पढ़ा था। इस प्रकार विभिन्न रचनाकारों को पढ़ने के पश्चात् उस साहित्य का प्रभाव संजीव पर दिखाई देता है।

1.2.3 मेधावी व्यक्तित्व :-

संजीव बचपन से स्कूल में मेधावी छात्र रहे हैं। स्कूल में वे हमेशा से फर्स्ट आते थे। विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे कविता प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ आदि में वे हमेशा सहभागी रहतें। बीच-बीच में वे मौसमी लेखन भी करते थे। लेखन में कविता, कहानी, निबंध के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए। आगे विज्ञान के छात्र बने और बी.एस.सी. डिस्टिंक्शन से पास होकर दिल्ली में ए.एम.आई.इ. पूरा किया। अत: वे पहले से मेधावी व्यक्तित्ववाले छात्र रहें।

---

1. साहित्य हिंदुस्तान धनबाद, मंगलवार, 15 अगस्त, 2006

1.2.4 सहज निवेदन शैली :-

संजीव की निवेदन शैली अत्यंत सहज है। किसी खिलदंडी नदी-सी स्वाभाविक लय में बलखाती भाषा जिसमें अछूते-अनूठे बिम्बों एवं रुपको के छोटे-छोटे दीप हैं। उनकी हर रचना एक गंभीर प्रोजेक्ट की तरह खोजबीन, निरीक्षण-परीक्षण, रिसर्च विषयगत जानकारियाँ का संग्रह, अथक परिश्रम और अंतत: इन सब का कलात्मक जीवंत क्लासिक रचना में रूपांतरण ही है।

1.2.5 स्पष्टवादी लेखक :-

संजीव एक ऐसे रचनाकार हैं जो जीवन में इर्द-गिर्द बिखरी हुई कथास्थितियों को ईमानदारी से कहते हैं। संजीव यथार्थ को न तो फॉर्मूले के तहत देखते हैं और न ही यथार्थ का स्थूल आरोपण करते हैं। वे रचनाओं में यथार्थ की विभिन्न परतों को खोलते हैं और वास्तविक यथार्थ से पाठकों को परिचित कराते हैं। इस प्रकार वे स्पष्टवादी लेखक हैं।

1.2.6 आशावादी :-

संजीव का साहित्य पूरा आशावादी है जो उनके व्यक्तित्व का परिणाम है। वे मानते हैं कि ''पहले की तुलना में आज का यथार्थ कुछ ज्यादा ही उलझ गया है। आदमी, जिसे हम आदमी कहते हैं उसकी पूरी नस्ल ही बदल दिए जाने का खतरा उठ खड़ा हुआ है। ऐसा इसलिए कि विज्ञान और तक्नॉलॉजी, संसाधन उत्पादन और वितरण पूरी तरह अमेरिकी साम्राज्यवाद और बाजारवाद के शिकंजे में हैं और राजनीति, धर्म, साहित्य, कला और संस्कृति भी उसकी दाढ़ों में समाती जा रही है। इसलिए आज जनधर्मी साहित्य की चुनौतियाँ कठिन हैं और बहु आयामी भी। इसलिए लिखने मात्र बेहतर लिखने से कुछ बदलने वाला नहीं है। इस मायावी दैत्य को मात्र और मात्र जनधर्मी आंदोलन ही तोड़ सकता है।''[1] अत: कहना सही होगा कि साहित्य के प्रति संजीव आशावादी हैं।

1.2.7 मार्क्सवादी विचारों से अनुप्रणित :-

संजीव के साहित्य में मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव देखा जाता है। उनके साहित्य में नक्सलवादी आंदोलन, विचारधारा और समाज का लहुलुहान यथार्थ दिखाई देता हैं। साहित्य में समकालीन यथार्थ देश समाज की वर्तमान दशा और इस दशा को बदलने की

---

1. परस्पर : जुलाई, 2006, पृष्ठ - 30

कामना के साथ ही यह प्रस्तुत होता है। संजीव तंत्र, व्यवस्था, सरकार और शासन पद्धति में इसलिए असंतुष्ट हैं कि वह गरीबों, दलितों तथा तिरस्कारों की चिन्ता नहीं करता। व्यापक जीवनानुभव एवं यथार्थ की परत-दर-परत उघेड़ते रहने के कारण संजीव की रचनाओं में भारतीय राज्य व्यवस्था का वास्तविक चित्र मौजूद है। वे कहते है, ''मौत की हजार बाहें और जिन्दगी की हजार नियामतें। बूंद खून की हो, पसीने की या लार की हजार रंग बदलती है। यह कहानी, कविता, साहित्य या कला मात्र का ही गुण है कि रह इन रंगों-रंध्रों तक फैलता है और कण से लेकर कायनात तक को आज के इंसान के संवेदना सूत्र से मापता है और मनुष्य बनाये रखता है। क्रौंच वध के 'मा निषाद ...' से लेकर 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई पर पीड़ा सम नहीं अधमाई' और 'कबिर' सोई पीर हैं, जो जाने पर पीर ...' से लेकर आज तक कला और साहित्य का यही मंत्र जाना और मार्क्सवाद की राह चुनी।''[1]

कहना सही होगा कि, हर प्रकार के शोषण, अन्याय और असमानता के विरूद्ध वे जनसाधारण का पक्ष लेते हैं, उनकी बेहतरी के लिए संघर्ष करते हैं, यधास्थिति के खिलाफ परिवर्तन के वे पक्षधर हैं।

1.2.8 जनवादी लेखक :-

संजीव ने हर बार नयी जमीन तोडी है, मुश्किल और चुनौतीपूर्ण लिखा है कहानियाँ हो अथवा उपन्यास उसमें अलग-अलग जीवन चित्रण सचमुच अचरज में डालनेवाल हैं। जिसमें रचना के पात्रों की मानसिक स्थिति वास्तविक जिंदगी जीने की उत्कट जिजीविषा, लोगों की जीवन आख्यान आदि का अंकन उन्होंने किया हैं। लेखन के विविधता के बारे में जब पूछा जाता है तो वे कहते, ''एक जुनून है जो मुझसे काम करवा ले जाता हैं।''[2] इस प्रकार उनकी विनम्रता और बड़प्पन ही हैं कि इतने प्रसिद्ध लेखक होने के बाद भी वे लेखकीय दर्प से कोसों दूर हैं।

साहित्य में भी हर क्षेत्र की तरह राजनीति, षड्यंत्र, तिकडमें हैं लेकिन संजीव इनसे कोसों दूर हैं। संजीव ने सिर्फ अपने कलम की ताकत के बल पर ही अनेक ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं। आज वे कई सम्मानों से सम्मानित हैं, फिर भी उनके लेखन में नयों की-सी ताजगी और ताकत है। कलम और विचार के प्रति उनकी अटूट निष्ठा है। एक जनवादी लेखक के इन्हीं गुणों से वे आज कामयाब भी हैं।

---

1. परस्पर : जुलाई, 2006, पृष्ठ - 29-30
2. वही, पृष्ठ - 41

1.3 संजीव की साहित्य यात्रा अर्थात् कृतित्व :-

संजीव ने अपने व्यापक अनुभव विश्व एवं सूक्ष्म-पर्यवेक्षिणी दृष्टि के कारण मध्यवर्ग, निम्नवर्ग शोषितों, आदिवासियों, नक्सलवादियों, मजदूरों आदि के जीवन जैसे अनेक नवीन विषयों तथा भाषा शिल्पगत नवीन प्रयोगों की ओर विशेष ध्यान देकर अपनी साहित्यिक समृद्धता एवं श्रेष्ठता का परिचय दिया है।

इनकी पहली कविता 'ड्रीलपर' 1955 में आयी जो तुकबंदी जैसी थी। बाद में 1957 में हस्तलिखित पत्रिका 'पल्लव' में पहली कहानी 'परिवर्तन' आयी। प्रारंभ में ये कविताएँ लिखा करते थे। बाद में 'सारिका' में 1976 में पहली कहानी आयी 'किस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का'। संजीव ने अपने लगभग तीस बरस के सफरनामें में आठ उपन्यास और नौ कहानी संग्रह एक नाटक हिंदी साहित्य जगत् को दिए हैं। संख्या से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है उनका साहित्य। आज तक की उनकी साहित्य यात्रा उल्लेखनीय रही है।

1.3.1 उपन्यास साहित्य :-

		प्रकाशन	प्रथम संस्करण
1.	किशनगढ़ के अहेरी	मीनाक्षी प्रकाशन मंदिर	1981
2.	सर्कस	राधाकृष्ण प्रकाशन	1948
3.	सावधान ! नीचे आग हैं	राधाकृष्ण प्रकाशन	1986
4.	धार	राधाकृष्ण प्रकाशन	1990
5.	पाँव तले की दूब	प्रवीण प्रकाशन	1995
6.	जंगल जहाँ शुरू होता हैं	राधाकृष्ण प्रकाशन	2000
7.	सूत्रधार	राधाकृष्ण प्रकाशन	2003
8.	किशोर उपन्यास	राणी की सराय-अक्षर प्रकाशन	1984

1.3.2 कहानी-संग्रह :-

		प्रकाशन	प्रथम संस्करण
1.	तीस साल का सफरनामा	दिशा प्रकाशन	1981
2.	आप यहाँ हैं	अक्षर प्रकाशन	1984

3.	भूमिका और अन्य कहानियाँ	पराग प्रकाशन	1987
4.	दुनिया की सबसे हसीन औरत	यात्री प्रकाशन	1990
5.	प्रेत मुक्ति	दिशा प्रकाशन	1996
6.	प्रेरणास्त्रोत तथा अन्य कहानियाँ	किताब घर प्रकाशन	1995
7.	ब्लैक होल	दिशा प्रकाशन	1997
8.	खोज़	दिशा प्रकाशन	2002
9.	डायन और अन्य कहानियाँ	नेशनल लिटरेरीमिशन	1999
10.	गति का पहला सिद्धांत	मेधा बुक्स	2004
11.	गुफा का आदमी	भारतीय ज्ञानपीठ	2006

1.3.3 नाटक साहित्य :-

1. ऑपरेशन जोनाकी संबोधन पत्रिका में प्रकाशित सं.कमरमेवाडी

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान :-

1. सन् 1980 में संजीव को सारिका सर्वभाषा कहानी प्रतियोगिता में 'अपराध' इस कहानी के लिए प्रथम पुरस्कार मिला।
2. सन् 1997 में 'लखनऊ' से 'प्रथम कथाक्रम सम्मान' प्राप्त हुआ।
3. सन् 1996 में 'रानीगंज' से 'गणमित्र सम्मान' से पुरस्कृत किया।
4. सन् 2001 में लंदन से उन्हें 'इन्दुशर्मा' अन्तर्राष्ट्रीय कथा सम्मान' से पुरस्कृत किया।
5. कोलकत्ता से सन् 2003 का 'प्रेमचंद सम्मान' प्राप्त हुआ।
6. सन् 2004 में भिखारी ठाकुर लोक सम्मान प्राप्त हुआ।
7. सन् 2006 में 'पहल सम्मान' से पुरस्कृत किया।

1.5 डॉ. रवींद्र ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

मराठी कथा साहित्य, आलोचना, समीक्षा आदि में अपने बहुमुखी प्रतिभा का परिचय देनेवाले आधुनिक मराठी साहित्यिक डॉ. रवींद्र ठाकुर एक सर्जनशील रचनाकार हैं। सत्य के आकांक्षी, अन्याय के विरुद्ध बेचैन, भविष्य के प्रति आस्थावान, विवेक और बुद्धि का उचित समन्वय रखनेवाले, जीवन को सच्चाई के रूप में अभिव्यक्त करनेवाले

बहुमुखी प्रतिभासंपन्न डॉ. ठाकुर संख्यात्मक ही नहीं बल्कि गुणात्मक दृष्टि से भी एक सशक्त रचनाकार हैं।

1.5.1 जन्म-तिथि तथा जन्मस्थान :-

मराठी साहित्य में अपना अनूठा स्थान रखनेवाले बहुमुखी प्रतिभासंपन्न कवि, लेखक डॉ. रवींद्र ठाकुर का जन्म 14 अप्रैल, 1955 में महाराष्ट्र के जलगांव जिले में 'उत्तराण तहसील के अंतर्गत होनेवाले ऐरोंडल' गाँव में हुआ।

1.5.2 परिवार :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर के परिवार में उनकी पत्नी श्रीमती. नलिनी ठाकुर है जो बारहवीं पास है। श्रीमती नलिनी जी को घर के कामों में अधिक रुचि है। डॉ. रवींद्र ठाकुर के एक लड़की और लड़का है। लड़की शर्मिष्ठा एम्.ए., बी.एड्. (अंग्रेजी) पूरा कर एम्.फिल. कर रहीं है। लड़का अनिकेत पूना में ॲनिमेशन का काम करता है। इस प्रकार चार सदस्यों का छोटा-सा उनका परिवार है।

1.5.3 शिक्षा :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर की प्रारंभिक शिक्षा महाराष्ट्र के जलगांव जिले में उत्तराण तहसिल के अंतर्गत होनेवाले एरोंडोल में हुई। वहीं पर 'संत ज्ञानेश्वर महाविद्यालय' सुळगांव में बी.ए. तक की शिक्षा पूरी की। आगे औरंगाबाद में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विश्वविद्यालय में एम्.ए. की शिक्षा पूरी की।

1.5.4 नौकरी :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर एम्.ए. पूरा करने के बाद जुलाई, 1978 से अब तक मराठी के अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। साथ में उनका शोध कार्य भी जारी है। सबसे पहले वे लातुर जिले के मा. मास्टर दीनानाथ मंगेशकर कॉलेज, औराद शहाजानी में 2 वर्ष ज्युनिअर पर अध्यापक रहें। आगे उदयगिरी कॉलेज, उदगीर में चार वर्ष कार्य किया। फिर कोल्हापुर के यशवंतराव चव्हाण कॉलेज में वे अध्यापक रहें। अब वे 'शिवाजी विश्वविद्यालय के मराठी अधिविभाग में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं।

1.5.5 विवाह एवं दांपत्य जीवन :-

जीवन में विवाह का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। डॉ. रवींद्र ठाकुर का विवाह नलिनी ठाकुर से हुआ। वे बारहवीं पास हैं। श्रीमती नलिनी घर के कामकाज खुद सँभाल लेती हैं जिससे डॉ. रवींद्र ठाकुर को अपना लेखन कार्य अबाध गति से चलाना सुकर हो जाता है। साथ में कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को लिखकर रखना, यहाँ से लेखन के लिए घर की स्थिति अनुकूल बनाकर रखना यहाँ तक वे उनकी मदद करती हैं। डॉ. रवींद्र ठाकुर के लेखन में तथा साहित्य सृजन में श्रीमती नलिनी का महत्त्वपूर्ण साथ रहा है। अत: कहना सही होगा कि वे अपने दांपत्य जीवन से संतुष्ट हैं।

1.5.6 साहित्य में रुचि :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर को बचपन से साहित्य में रुचि है। प्रकृति के रूपों का आकर्षण तो उन्हें पहले से था। फिर स्कूल से वे कविता, वादविवाद में सहभागी हो जाते और फिर जैसे-जैसे मन में आता गया वैसे-वैसे वह लिखते गए। वे कहते हैं कि ''कोई बात सोचकर नहीं की। एक उम्र थी तब कविता करता था। अब भी मन में आता है तो लिखते जाता हूँ।''[1] इससे स्पष्ट है कि बचपन से उन्हें साहित्य में रुचि थी।

1.6 व्यक्तित्व की विशेषताएँ :-

1.6.1 बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर का बाह्य व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक है। प्रथम दर्शन में ही बाह्य व्यक्तित्व देखनेवालों को प्रभावित करता है। गौर वर्ण, मँझला कद, दीप्तिमान चेहरा, साथ में चेहरे पर हमेशा से एक दोस्ताना हँसी। जीवन की सच्चाई और कटु अनुभव ही खासियत है। जितना उनका बाहरी व्यक्तित्व आकर्षक है उतना ही आंतरिक भी। आडंबर और प्रदर्शन से बेहद नफरत। सरल स्वभाव, अत्यंत जिंदादिल, स्नेहपूर्ण, अभिभावकीय स्नेह से पूरित, विनोदशील, दृढनिश्चयी, शिष्यवत्सल, दूसरों को मदद करने में अत्यंत तत्पर यही है उनका व्यक्तित्व।

---

1. परिशिष्ट - 2 से उद्धृत।

1.6.2 मेधावी व्यक्तित्व :-

बचपन से पढ़ने-लिखने में वे रुचि रखते हैं। बचपन से पढ़ने की रुचि के कारण हर प्रकार का साहित्य पढ़ा। वे कहते हैं कि ''सोचकर कुछ भी नहीं किया। पहले मन में इच्छा जगी और लिखता रहा। बी.ए. और एम्.ए. में शिक्षा लेते समय कविता रचा करता और फिर कविताओं के बाद समीक्षा की तरफ बढ़ा।''[1] अत: कहना सही होगा कि डॉ. रवींद्र ठाकुर बचपन से ही मेधावी व्यक्तित्व के रहे हैं।

1.6.3 सहज निवेदन शैली :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर की निवेदन शैली अत्यंत सहज एवं सुंदर है। भाषा में एक प्रकार की सत्यता एवं सर्जनशीलता है। पाठकों के साथ तादात्म्य कर देनेवाली निवेदन शैली। हर रचना में निवेदन का उनका अपना अंदाज है। चरित्र उद्घाटन करते समय जिस प्रकार की सत्यता एवं सर्जनशीलता चाहिए थी उसका सहज समन्वय उनके साहित्य में है।

1.6.4 स्पष्टवादी लेखक :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर अपने लेखन में यथार्थ को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। हर घटना, यथार्थ और कल्पना का ध्यान रखकर स्पष्ट रूप में लेखन करते हैं। अत: वे स्पष्टवादी लेखक हैं, जिन्होंने अपने साहित्य में भी स्पष्टवाद रखा है।

1.6.5 पारदर्शक :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर का साहित्य अत्यंत पारदर्शक है। आदमी के कमीने पन से उन्हें अत्यंत नफरत है। जातिवाद, सामन्तवाद, पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, विस्तारवाद, उपनिवेशवाद, इसी कमीनेपन के परिणाम हैं और उनके लेखन में इन्हीं चीजों पर निशाने दिखाई देते हैं। व्यक्तित्व के पारदर्शकत्व की बात उनके साहित्य में भी दृष्टिगोचर होती है। हर साहित्य कृति में वे इसे पूरा करते हैं।

1.6.6 जनवादी लेखक :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर ने अपने साहित्य में साधनहीन, सुखहीन, जनसामान्य की हिमायत की है। डॉ. रवींद्र ठाकुर का साहित्य अपने समय की वर्गचेतना को प्रस्तुत करता है।

---

1. परिशिष्ट - 2 से उद्धृत।

शोषण, अन्याय, आक्रमण, दमन, पतन, उत्पीड़न आदि विषयोंपर उन्होंने अपनी कलम चलाकर उसके खिलाफ वर्ग संघर्ष को खड़ा किया है। जनवादी लेखक को जो स्नेह और श्रद्धा मिलनी चाहिए वह सब ठाकुर को मिली है।

1.7 डॉ. रवींद्र ठाकुर की साहित्य यात्रा अर्थात् कृतित्व :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर बीसवीं सदी के अंतिम दो दशक के मराठी साहित्य जगत् में प्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार, समीक्षक और सर्जनशील रचनाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अब तक तीन उपन्यास, दो कविता संग्रह, नौ समीक्षा ग्रंथ, एक अनूदित साहित्य आदि का लेखन किया है। उनका कृतित्व अर्थात लेखन साहित्य इस प्रकार है -

1.7.1 उपन्यास साहित्य :-

		प्रकाशन	प्रथम संस्करण
1.	महात्मा	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	1999
2.	उद्या पुन्हा हाच खेळ	स्वरूप प्रकाशन, औरंगाबाद	1999
3.	धर्म युद्ध	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	2003

1.7.2 कविता संग्रह :-

1.	अनिकेत	आंतरभारतीय प्रकाशन, औराद शहाजानी	1981
2.	दस्तुरखुद	दिर्लापराज प्रकाशन, पुणे	2004

1.7.3 अनूदित साहित्य :-

1.	निवडणुकीतील घोटाळा	नॅशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली	2001

1.7.4 समीक्षा :-

1.	मराठी ग्रामणी कादंबरी	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	1993
2.	आनंद यादव : व्यक्ती आणि वाङ्.मय	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	1993
3.	कादंबरीकार र.वा. दिघे	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	1995

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

4.	साहित्य : समीक्षा आणि संवाद	दिलीपराज प्रकाशन, पुणे	1999
5.	क्रांतिजागर (म.फुलेजी समग्र कविताओं का सटिप संपादन)	स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे	1999
6.	प्रवाह आणि प्रतिक्रिया	स्वरूप प्रकाशन, औरंगाबाद (1975 के बाद की कविताओंका मूल्यांकन)	1999
7.	ना.वि.जोशीकृत पुणे वर्णन	मुद्रा प्रकाशन, कोल्हापुर	2003
8.	साहित्य संवाद	(संपादित)	
9.	आत्मसंवाद	(संपादित)	

1.7.5 किशोर उपन्यास :-

1. वायरस

1.8. पुरस्कार एवं सम्मान :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर मराठी के एक सशक्त उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके सशक्त कृतित्व का परिचय उनको मिले पुरस्कार एवं मान-सम्मानों से दृष्टिगोचर होता है। अब तक डॉ. रवींद्र ठाकुर को निम्नांकित पुरस्कार एवं मान-सम्मानों से विभूषित किया गया है।

1 'मराठी ग्रामीण कादंबरी' इस ग्रंथ के लिए डॉ. ठाकुर को 'भि.ग. रोहमारे' उत्कृष्ट ग्रंथ पुरस्कार सन् 1995 में मिला।

2 शिवाजी विद्यापीठ की ओर से दिया जानेवाला 'उत्कृष्ठ ग्रंथ पुरस्कार' सन् 1995 में 'आनंद यादव : व्यक्ती आणि वाङ्.मय' इस ग्रंथ के लिए मिला।

3 'कादंबरीकार र.वा. दिघे' इस ग्रंथ के लिए डॉ. ठाकुर को 'महानुभाव विश्वभारती पुरस्कार' जो अमरावती से हैं यह 1996 में मिला।

4 मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे इस प्रकाशन संस्था के द्वारा दिया जानेवाला 'रणजित देसाई पुरस्कार' ठाकुर के 'महात्मा' इस उपन्यास को सन् 2000 में प्राप्त हुआ।

5 डॉ. ठाकुर के 'महात्मा' इस उपन्यास के लिए 'रा.तु. पाटील परखड पुरस्कार सन् 2002 में प्राप्त हुआ।

6 'शिवाजी विश्वविद्यालय का उत्कृष्ट ग्रंथ पुरस्कार' डॉ. ठाकुर के 'साहित्य : समीक्षा आणि संवाद' इस ग्रंथ को सन् 2006 में प्राप्त हुआ।

7 शिवाजी विश्वविद्यालय का 2007 का 'आदर्श शिक्षक' पुरस्कार।

1.9 संजीव एवं रवींद्र ठाकुर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : तुलनात्मक विवेचन :-

विवेच्य दोनों उपन्यासकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के पश्चात उनके व्यक्तित्व में हमें कुछ बातों में साम्य दिखाई देता है तो कुछ बातों में भेद दिखाई देता है। दोनों उपन्यासकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर जो साम्य दिखाई देता है, वह इस प्रकार है -

1.9.1 साम्य :-

1 संजीव तथा डॉ. रवींद्र ठाकुर दोनों क्रमश: हिंदी तथा मराठी साहित्य जगत् में श्रेष्ठ हैं।

2 दोनों रचनाकार मानवतावादी कथाकार के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं और दोनों ने यथार्थवादी, जनवादी कथा साहित्य को विकसित किया है।

3 दोनों ऐसे रचनाकार हैं जिनकी दृष्टि मानवीय एवं व्यापक सन्दर्भों के साथ जुड़ी हुई है।

4 दोनों रचनाकार बाह्याडम्बर से बेहद नफरत करते हैं।

5 दोनों रचनाकार समाज को सकारात्मक नजरिए से देखते हैं। साथ में लोगों की समस्याओं को उनकी भाषा मे व्यक्त करते हैं।

6 दोनों रचनाकारों का व्यक्तित्व अंतर्बाह्य एकदम सीधा-सादा है।

7 दोनों साहित्यकारों ने कहानी, कविता, उपन्यास, समीक्षा तथा संपादित साहित्य का सृजन किया।

8 दोनों साहित्यकार दलित, पीड़ित, शोषित के पक्षधर परिलक्षित होते हैं।

9 दोनों साहित्यकार जीवन संग्राम के अपराजेय योद्धा, रुढि एवं परंपरा के ध्वसंक, प्रगतिवादी विचारक के रूप में परिलक्षित होते हैं।

10 दोनों रचनाकारोंने पात्रों के बाह्य व्यक्तित्व की अपेक्षा उनके आंतरिक व्यक्तित्वपर बल दिया है।

11 दोनों रचनाकारों का अनुभव क्षेत्र व्यापक है।

12 दोनों रचनाकारों के साहित्य में विषयवस्तु संवेदना और भाषिक समृद्धि स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होती है।

13 दोनों रचनाकारों ने अपने चरित्रों द्वारा नैतिक आदर्श की प्रतिष्ठापना की है।

विवेच्य साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के पश्चात जो वैषम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

1.9.2 वैषम्य :-

1 संजीव के साहित्य का मुख्य विषय 'संघर्ष है तो डॉ. रवींद्र ठाकुर के साहित्य में विविधता है।

2 संजीव प्रशासकीय क्षेत्र से तो डॉ. रवींद्र ठाकुर अध्यापक क्षेत्र से संबंधित हैं।

3 संजीव घुमक्कड प्रवृत्ति के साहित्यकार हैं जो किसी जगह ज्यादा दिन नहीं ठहरे। डॉ. रवींद्र ठाकुर किसी कारण वश ही यात्रा करते हैं।

4 डॉ. रवींद्र ठाकुर के दो कविता संग्रह हैं तो संजीव का एक भी कविता संग्रह नहीं है।

5 डॉ. रवींद्र ठाकुर का समीक्षात्मक साहित्य बहुत हैं, संजीव का समीक्षा साहित्य अत्यंत अल्प है।

निष्कर्ष :-

संजीव तथा डॉ. रवींद्र ठाकुर दोनों ऐसे रचनाकार हैं जो युगधारा में बहने की अपेक्षा उसे अपने काबू में रखकर विविध विधाओं का लेखन करते हैं। दोनों का साहित्य मौलिक एवं समृद्ध हैं। दोनों अपने-अपने साहित्य क्षेत्र में श्रेष्ठ रहे हैं। दोनों अपने देश, समाज एवं लोगों से अधिक सरोकार रखते हैं उनकी ओर सकारात्मक नजरिए से देखते हैं। दोनों का जीवन साहित्य के लिए समर्पित है। दोनों का रहन-सहन बिल्कुल सीधा-सादा है। दोनों शोषित पीड़ित, मध्यवर्गीय दलित तथा नारी आदि का पक्ष लेते हैं। दोनों का अनुभव क्षेत्र व्यापक है।

जहाँ कहीं भी दु:ख वेदना है उसे मानवतावादी दृष्टिकोण से दोनों चित्रित करते हैं। दोनों का साहित्य मानवतावाद का चिरंतनमूल्य सामने रखनेवाला होने के कारण उनके साहित्य को श्रेष्ठता प्राप्त हो गई है। दोनों जीवन के अनुभवों को स्वयं जीते हैं और उन अनुभवों को अपने कलम में बांध लेते हैं। दोनों कथा-साहित्यकार जीवन संग्राम के अपराजेय योद्धा, उदार मानवतावादी रूढ़ि-परंपरा के ध्वंसक और प्रगतिवादी विचारक हैं। दोनों 'कला जीवन' के लिए माननेवाले कवि तथा कथा साहित्यकार हैं। संजीव के साहित्य का मुख्य विषय 'संघर्ष' है तो ठाकुर के साहित्य में विविधता दिखाई देती है।

* * * *